२. साखी :-(कबीर)

शब्दार्थ :

बाँणी - वाणी, बोली, वचन

आपा - अहंकार

खोइ - खो जाए

तन - शरीर

सीतल - शीतल, ठंडा

औरन को - औरों को, दूसरों को

कस्तूरी - एक ऐसा सुगंधित पदार्थ जो विशेष हिरण की नाभि में पाया जाता है।

कुंडलि - नाभि

दीपक दिया - दिया

देख्या - देखना

माँहि - अंदर

सुखिया - सुखी

खाये - खाए

अरु - और

जागै - जागना

बिरह - मिलन न हो-

मंत्र - उपाय

लागै - लगना

बौरा - पागल

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर :

(क)

1. मीठी वाणी बोलने से औरों अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

A:) मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख इस प्रकार प्राप्त होता है, कि लोग आदर और सम्मान भरे वचनों को सुनकर सुखी होते हैं। इसी प्रकार मीठी वाणी बोलने वाला व्यक्ति बातचीत करते हुए जब अहंकार का त्याग कर देता है।

2. दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

A:) यहाँ दीपक का अर्थ भक्तिरूपी ज्ञान तथा अंधकार का अर्थ अज्ञानता से है। जिस प्रकार दीपक के प्रकाश से अंधकार समाप्त हो जाता है उसी प्रकार अहंकार नष्ट होने तथा ईश्वर के प्रेम रूपी प्रकाश होना चाहिए।

3. ईश्वर कण - कण में व्याप्त है पर हम उसे क्यो नहीं देख पाते ?

A) ईश्वर कण - कण मे व्याप्त है, पर हम उसे इसलिए नही देख पाते क्योकि हम अज्ञानी अविश्वासी एवं अहंकार हमे ईश्वर तक पहुँचने नही देता और हम केवल संसारिक आडंबरो मे फँसकर रह जाते है।

4. कबीर ने स्वयं को दुखिया और संसार को सुखिया कहा है, कथन स्पष्ट किजिए।

A.) संसार मे सुखी व्यक्ति वह है, जो ईश्वर के प्रति प्रेम न रखकर तन - मन से संसारिक सुखो को भोगता है अपना जीवन सुख - समृद्धि आदि को भोगता है। संसार मे दुःखी व्यक्ति वह है, जो ईश्वर के प्रेम मे पड़कर दिन - रात उससे मिलने के लिए जागता और तड़पता रहता है।

5 अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?

A) अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने उपाय सुझाते हुए बताया है कि हमें निंदा करने वाले मनुष्य को सदा अपने पास रखना चाहिए और उनकी बातों पर ध्यान देना चाहिए।

6 "ऐकै अषिर पीव का, पढै सु पंडित होइ" इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

A) इस पंक्ति द्वारा कवि ने प्रेम की महत्ता को बताया है। ईश्वर को पाने के लिए अक्षर प्रेम का अर्थात् ईश्वर पढ़ लेना ही पर्याप्त है।

7 कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

A) कबीर की भाषा से सधुक्कड़ी प्रभाव दिखाई देता है। उन्होंने ब्रज, पंजाबी, अवधी, राजस्थानी, मरसी, अरबी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है।